International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-05-2021, Accepted: 04-06-2021, Published: 22-06-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 111-115

अमरकांत एवं मार्कण्डेय: व्यक्तित्व एवं साहित्य

अमर कुमार चौधरी
हिन्दी विभाग, गोखले मेमोरियल गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
साहित्य की श्रेष्टता एवं सफलता तभी सिद्ध होती है, जब लेखकीय बोध रचना द्वारा कला के स्तर को प्राप्त कर लेता है। जहाँ जीवन-बोध की नवीनता अपने-आप में परंपरा से हर मायने में असंगत हो। वहाँ तो जीवन-बोध का साहित्य में रूपान्तरण और भी कठिन हो जाता है। एक ओर इस प्रतिक्रिया को पूर्ण होते देर भी लगती है और दूसरी ओर संक्रांतिकालीन अनुभूतियों के साथ ईमानदार रहने में भयंकर यतनाओं से गुजरना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि साहित्य निर्मित प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और फिर उसी धारा के अंतर्गत रचनात्मकता का नया प्रवाह ऊपर उठने की कोशिश करता है। यह नया प्रवाह पुराने की प्रेरणाओं को लेकर ही आगे बढ़ता है और गलत दिशा में जाने वाले अपने प्रवाह के पिछले हिस्से को सही दिशा देता है। हमें लगता है कि साहित्य की धारा के अंतर्गत सातवें दशक की हिन्दी कथा-साहित्य के रचनात्मक मोड को स्पष्ट करती है। नई कहानी वास्तव में पूर्व से प्रचलित कहानी विधा में एक नया और महत्वपूर्ण मोड था। आजादी के बाद का मोहभंग निराशा और जीवन के यथार्थ अनुभव को नयी कहानी ने सामने लाया। नयी कहानी के कथाकारों ने जो अनुभव निजी जीवन में किया। उसी को अपनी लेखनी के माध्यम से सामने भी लाया।

मुख्य शब्द: संक्रांतिकालीन अनुभूतियाँ, हास्यनोमुखी प्रक्रिया, स्पष्टवादिता, रूमानी भावना, संकल्पित।

प्रस्तावना
आज की हिन्दी कहानी जिसमें पिछले दोनों दशक शामिल है निश्चित रूप से नए युग की सृष्टि है। अतः स्वभाव से ही उसमें संक्रांतिकालीन चेतना का स्तर सबसे तीव्र है। इसके अंतर्गत हर परंपरा की अस्वीकृति प्रयोगशीलता वैज्ञानिक दृष्टि और बौद्धदिक जटिलता के साथ युग संत्रास को अस्तित्व के रूप में झेलने की क्षमता भी है। स्पष्ट है नई कहानी आधुनिक जीवन की हास्यनोमुखी प्रक्रिया एवं विघटन के प्रति अपना तीव्र क्षेम प्रकट कर रही है। स्वंतत्रता के बाद परिवर्तन के जिस सत्य को तत्कालीन लेखकीय संवेदना अनुभूतियों का हिस्सा बनकर व्यक्त करना चाह रहा था। उसी संवेदना को समकालीन कहानी अधिक सफलता से प्रकट कर रही है या करना चाहती है। वह इसलिए भी कि आज की कहानियों में घटना और पात्र की उपयोगिता वहीं तक है। जहां तक वह किसी मनःस्थिति या विचारगत विशेषता को उद्घाटित करने में सहायक हो। इसलिए आज कहानियों में सामाजिक राजनीतिक मनोवैज्ञानिक ऐतिहासिकता पौराणिक आदि अथवा चरित्र-प्रधान घटना-प्रधान वातावरण-प्रधान अथवा प्रतिक्रियावादी आदि वर्गिकरण झूठे और अस्वाभाविक हो गए है। नयी कहानी का यह नयापन स्वतंत्र भारत की सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तन के बीच से अपनी जमीन बना रहा था। इसी धारा के कहानीकार अमरकांत जी थे।"50 के बाद हिन्दी कहानी के क्षेत्र में जिस जागरूक नयी पीढ़ी का प्रवेश हुआ अमरकांत का नाम उसमें अग्रणी है।"[1]

अमरकांत जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगरा कस्बे के पास स्थित छोटा-सा गाँव भगमलपुर में 1 जुलाई 1925 ई॰ में एक कायस्थ परिवार में हुआ। बचपन में इनके दो नाम थे एक श्रीराम और दूसरा अमरनाथ। अमरनाथ नाम किसी साधु द्वारा रखा गया था। आगे चलकर अमरनाथ का नाम बदलकर अमरकांत हो गया और यही नाम साहित्य-जगत में प्रचलित हुआ। अमरकांत जी ने कहानी के प्रति सारा दृष्टिकोण ही बदल दिया। उनके पहले की कहानियों में या तो शुद्ध कल्पना का विकास होता था या नीति और उपदेश के स्थूल सूत्र होते थे। अमरकांत जी ने एक ओर यदि कहानियों में मनोरंजन और मानसिक तृप्ति की आवश्यकता बताई तो दूसरी ओर उससे चरित्र निरूपण की सम्भावना की ओर संकेत किया और अंततः उन्होंने कहानी का आधार अनुभूति को बताया घटना को नहीं। "आज की कहानी में द्वंद्वात्मकता और संदेह आत्म-विकृति और आत्म-विभाजन

से मुक्त जिस मनुष्यता की अनुभूति दिखाई देती है वह स्वांतत्र्योत्तर अनुभूति है।"[2]

ग्रामीण परिवेश को अपने कथा-साहित्य में मुख्य स्थान देने वाले कथाकार मार्कण्डेय जी का जन्म 2 मई 1930 ई॰ में उत्तर-प्रदेश के जौनपुर जिले के बराई नामक गाँव में एक सामान्य खेतिहर परिवार में हुआ था। "भारत का यह प्रसिद्ध कथाकार मार्कण्डेय उत्तर-प्रदेश के जौनपुर जिले में 1930 में पैदा हुआ।"[3] इनका परिवार बहुत बड़ा और प्रतिष्ठित था। अपने परिवार में बालक मार्कण्डेय जी सबसे बड़े बेटे के बड़े बेटे थे। जिनके कारण उनका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से किया गया। मार्कण्डेय जी के पास अपने चारों ओर के वातावरण को देखने की अद्‌भुत शक्ति थी। उन्होंने गाँव वालों का सच्चाई से चित्रण ही नहीं किया बल्कि भारत जैसे प्रजातन्त्र देश में किसानों का महत्त्व दिखाते हुए उन्होंने खेतिहर मजदूरों के अधिकारों के लिए लड़ाई भी लड़ी है। वास्तव में वह अपने देश में होने वाली कृषि सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने में पूरी शक्ति के साथ प्रस्तुत हैं। वास्तव में हम मार्कण्डेय जी को भारत के ग्रामीण लोगों गायक कहे जा सकते है। उनका लिखा हरेक पृष्ठ भारतीय ग्राम-जीवन के उन विवरणों से भरा है जो प्रत्येक व्यक्ति को दिलचस्प लगेगा। "नई कहानी आंदोलन में मार्कण्डेय ग्राम कहानी के प्रवक्ता और सूत्रधार बनकर सामने आये। कहानी में ग्राम-कथानकों के अपने आग्रह को रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखा वास्तव में कहनी से सामने अभिव्यक्ति अथवा शिल्प की बारीक पैठ के साथ ही मुख्य बात है जीवन की उभरती हुई वास्तविकताओं को उसके पूरे परिवेश के साथ ग्रहण करने की।"[4]

अमरकांत जी के साहित्यिक विकासक्रम में उनका डायरी का योगदान अधिक रहा है। उन्होंने अपने छात्र जीवन से ही अपने पास एक डायरी रखते थे और उनमें उन घटनाओं का चित्रण होता था जो अमरकांत जी के साथ घटित होता था। डायरी लिखने की कला के कारण उनमें सृजन शक्ति का विकास हुआ जो आगे चलकर उन्हें एक बड़ा साहित्यकार बनाया। अमरकांत जी की पहली कहानी इंटरव्यू इसी डायरी लिखने की कला की देन है। "इस तरह इंटरव्यू कहानी साहित्य की ओर बढ़ता हुआ मेरा पहला कदम है। इसके बाद मैंने कई कहानियाँ लिखी।"[5]

प्रगतिशील लेखक संघ के अमरकांत जी सदस्य बने थे। यह एक प्रगतिशील विद्रोही की अन्याय शोषण और निर्धनता के विरुद्ध संघर्ष की सामाजिक एवं आर्थिक न्याय के लिए सतत प्रयास की और पिछड़ेपन, पुनरुत्थानवादिता, उच्चता, अस्पष्टता, ग्रामीणता एवं प्रतिक्रियावादिता के विरुद्ध जनवादी काला-मूल्यों की परंपरा थी। जिस पर चल कर अमरकांत जी अपने साहित्य का सृजन किए। समाज के लोगों को अंधकार से प्रकाश में लाए।। "अपने समय संदर्भों की पहचान की दृष्टि से अमरकांत की कहानियाँ उनके किसी भी समकालीन दूसरे लेखक की कहानियों की अपेक्षा अधिक प्रभावित और विश्वसनीय मानी जा सकती है।"[6]

भारतीय ग्राम्य-जीवन का चित्रण मार्कण्डेय जी के लिए एकमात्र आंदोलन या नारा नहीं था। वे देखते थे कि कठोर मेहनत करने के बावजूद किसान और मजदूर वर्ग गरीब, अभिशप्त और फटेहाल है क्योंकि सरकारी अफ्सरों और उनके कर्मचारियों का अत्याचार कम नहीं था। वे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उनका शोषण करते थे। "सरकारी विकास योजनाओं से सर्वाधिक लाभ किस वर्ग को हुआ किस वर्ग को सर्वाधिक नुकसान हुआ, किसने क्या पाया, किसने क्या खोया इसका ऐतिहासिक लेखा-जोखा मार्कण्डेय की कहानियाँ प्रस्तुत करती है।"[7]

मार्कण्डेय जी ने निरुत्तर कर देने वाली स्पष्टवादिता से उन परिस्थितियों का वर्णन किए हैं। जो भूमिहीन या छोटी भूमि वाले किसानों की गरीब जिंदगी में एक लंबे अरसे से चली आ रही थी। किसान सदा प्रकृति के समीप रहता है और उसकी क्रियाएँ प्रकृति की क्रियाओं से मिली-जुली रहती है। मार्कण्डेय जी के पास अपने चारों ओर के वातावरण को देखने की अद्‌भुत शक्ति थी, ठीक उसी तरह जैसे किसान के लिए उसका जमीन ही सब कुछ होता है, और उसका कर्मक्षेत्र भी वही होता है। मार्कण्डेय जी के शब्दों में "जन-जीवन ही लेखक के अनुभवों का आधार बन सकता है। लेखक की रचनात्मक शक्ति उतनी ही सबल और सार्थक होती है जितनी गहरी और तीव्र जन-जीवन की परिवर्तित भाव-भूमियों की उसकी पकड़ होती है। कहानी की नवीनता इस बात में नहीं होती कि वह किसी अंचल के लोगों की विशिष्टता का उल्लेख करे, बल्कि उसका नयापन इस बात में निहित है कि उस क्षेत्र में परिवर्तन के जो लक्षण उभर रहे हैं उसका अंकन हो।"[8]

साहित्य-सृजन अमरकांत जी के लिए बैठे-ढाले अथवा मनोरंजन का उपक्रम कभी नहीं रहा। वे रचना कर्म को सामाजिक दायित्व और संस्कृति से जोड़कर देखते हैं। इसलिए वैयक्तिक अनुभूति अथवा चेतना को रचना के धरातल पर सार्वभौमिक बनाकर ही देखना चाहते हैं। कोई भी विचारधारा यदि वह व्यापक कल्याण के अनुकूल नहीं है तो उनकी दृष्टि में वह रचनाकर्म में बाधक ही होगा। इसलिए अमरकांत जी मानते थे कि लेखक की प्रतिबद्धता विचारधारा से नहीं आंतरिक ईमानदारी और

मानवीय मूल्यों के साथ होनी चाहिए। अमरकांत जी एक लेखक होने के नाते से अन्य लेखकों से पूरी ईमानदारी के साथ साहित्य-सृजन की आशा करते हैं । प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अन्यायी शासन के आगे बिना घुटने टेके उसका सामना करने के अमरकांत जी हिमायती थे। अवसरवादी होकर लेखनी से समझौता करने वालों के प्रति उनके मन में दुख है। किसी 'वाद' की चार दीवारी उन्हें स्वीकार नहीं है । हर वो विचारधारा जो समाज, जनता और देश के हित में है। उसे स्वीकार करने में उन्हें परहेज नहीं है । अमरकांत जी का साहित्यिक दृष्टिकोण बड़ा ही व्यापक और उदार है । उनका सम्पूर्ण कथा-साहित्य उनकी इसी समर्पित और संकल्पित मूल्य चेतना का प्रमाण है । मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग को केंद्र में रखकर लिखा गया उनका सम्पूर्ण कथा-साहित्य यथार्थ की ठोस जमीन का आधार लिए हुए है। "किसी भी लेखक या विचारक के विपुल साहित्य संसार में उसकी मनोवृत्ति, उसका व्यक्तित्व, उसकी कल्पनाएँ महत्त्वकांक्षाएँ, उसकी दुर्बलताएँ प्रच्छन्न छिपी पड़ी रहती है। यदि उसे व्यक्तित्त्व के सुवर्ण को प्राप्त करना है तो उसके आवरणों को चीरना ही पड़ेगा।"[9]

मार्कण्डेय जी हमारे समाज की वास्तविक छवि को दिखते हैं । जिसमें हमारे भारतीय ग्रामीण समाज जी रहे हैं । हमारे देश की कुल आबादी के नब्बे प्रतिशत लोग इसी तरह का जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग सुख एवं वैभव का जीवन व्यतीत करते हैं जिनकी संख्या गिनती में है, वे इन गरीबों की गरीबी, बेवसी तथा लाचारी का मज़ाक उड़ाते हैं, परंतु इनके बेहतर जीवन के लिए रत्ती भर भी अपना योगदान नहीं देते हैं । शहर की स्थिति गाँव से काफी अलग है । धन-दौलत, ताम-झाम, ऐश्वर्य सभी चीजें शहर में मौजूद है। सही मायने में देखा जाए तो शहर के तमाम ताम-झाम चका-चौंद गाँव के बदौलत है । इस संदर्भ में महात्मा गांधीजी का दृष्टिकोण है । “शहरों में दिखाई जाने वाली धन-दौलत से हमें धोखा नहीं खाना चाहिए। यह इंग्लैंड या अमेरिका से नहीं आती । यह सर्वाधिक गरीबों के खून से प्राप्त होती है। ऐसा कहा जाता है कि भारत में सात लाख गाँव है । किसी के पास इस बात का लेखा-जोखा नहीं है कि इनमें बंगाल और कर्नाटक और अन्य जगहों पर कितने हजार गाँव भूख और बीमारी से नष्ट हो गए । सरकारी रजिस्टर यह नहीं बता सकता कि ये ग्रामीण किन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं । लेकिन स्वयं एक ग्रामीण होने के नाते मैं गाँव की दशा जनता हूँ। मैं गांवों की अर्थव्यवस्था जनता हूँ। मैं आपकों बताता हूँ कि ऊपर का दबाब नीचे के लोगों को ही कुचलता है।”[10]

अमरकांत जी अपने छात्र-जीवन से ही पत्रकार बनने का निश्चय किए थे, क्योंकि उनका मानना था कि उन्हें देश के लिए कुछ करना है। जब अमरकांत जी बलिया गवर्नमेंट हाई स्कूल के कक्षा नौ के छात्र थे, तो उनके एक मित्र जो उनसे एक कक्षा आगें पढ़ते थे, वह हस्तलिखित पत्रिका निकालता था । जिसमें संपादक के रूप में अपना नाम देता था। अमरकांत जी भी उस हस्तलिखित पत्रिका का सदस्य बन गए और काफी उत्साह और आत्मविश्वास के साथ उस पत्रिका के लिए कहानियाँ लिखने लगे। किन्तु यह हस्तलिखित पत्ररिका अधिक समय तक नहीं चल पाया क्योंकि उस समय देश के समक्ष बहुत-सी बड़ी चुनौतियाँ थी । देश अंग्रेजों क गुलाम था । इस समय स्कूलों में गाँधी जी और नेहरू जी का नाम बहुत कम लिया जाता था। ऐसे समय में अमरकांत जी के अंदर देश को स्वतंत्र कराने की भावना तीव्र हो गई। "मैं नवीं कक्षा में पहुँचा तो स्वातंत्रता आंदोलन एवं साहित्य परिचय ने मेरी जीवन-दिशा ही बदल दी । राष्ट्र से जुड़ना जोखिम का काम था उन दिनों। फिर भी कम उम्र अत्यल्प ज्ञान और अपरिपक्व बुद्धि ही हालत में कुछ क्रांतिकारी पुस्तकें पढ़ने और क्रांतिकारी नवयुवकों के संपर्क में आने के फलस्वरूप राष्ट्र से मेरे जुड़ाव में एक रूमानी भावना भी थी । बहरहाल भारतमता के लिए सर्वस्व बलिदान की आकांक्षा सर्वोपरि हो गई।"[11]

आगरा के दैनिक पत्र 'सैनिक' के संपादकीय विभाग में अमरकांत जी कार्य करना शुरू किए । किन्तु वह अपना समय इस प्रकार गुजारने लगे जिसे 'लापरवाही' या 'आवारगी' कहा जा सकता है। अमरकांत जी अपने कार्य करने के उपरांत अपना अधिकतर समय दोस्तों तथा सभा समितियों में बिताने लगे उन्हें किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं थी। इन सबके पीछे कारण था कि अमरकांत जी स्वयं को लेखक बनाने का निश्चय कर लिए थे । अमरकांत जी बलिया में अधिक दिन तक ठहर न सके और पत्रकारिता करने इलाहाबाद आ गए । यहाँ 'अमृत पत्रिका' नामक दैनिक पत्र के संपादकीय विभाग में नौकरी मिल गया। "तीन वर्ष बाद जब मैं आगरा से विदा हुआ तो सब कुछ सोच कर अच्छा नहीं लगा। बलिया छोड़ने पर जैसा मोह होता था वैसा ही कुछ। इलाहाबाद में मैं फिर आ गया 'अमृत-पत्रिका' के एक पत्रकार के रूप में ।"[12]

इलाहाबाद में 'अमृत-पत्रिका' में कार्यरत रहते हुए अमरकांत जी को हृदय रोग के कारण लखनऊ जाना पड़ा । आय का निश्चित साधन न होने के कारण अमरकांत जी का यहाँ भी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी जिसके कारण उन्हें मानसिक द्वंद्व से ग्रस्त होना पड़ा । इसी दौरान अमरकांत जी 'मनोरमा' पाक्षिक पत्रिका में सम्पादन कार्य भी किए । 'मनोरमा' पत्रिका में सबसे ज्यादा समय अमरकांत जी ने व्यतीत किए थे । लगभग तीस वर्षों तक वे इस पत्रिका में अपना योगदान दिए थे ।"साहित्यकार अमरकांत भी 'मनोरमा' के सम्पादन से लंबे समय तक जुड़े रहे ।"[13] स्वयं अमरकांत जी का विचार था कि वे भी किसी पत्रिका का सम्पादन करें । किन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उनके इस विचार को फलीभूत होने में थोड़ा अधिक समय लगा । किन्तु अमरकांत जी ने साधनों के अभाव में भी कभी हार नहीं माना और अंततः उन्होंने 'बहाव' नामक पत्रिका का सम्पादन कार्य आरंभ किया ।

पत्रकारिता के क्षेत्र में मार्कण्डेय जी ऐसे समीक्षक है । जिन्होंने आजादी के बाद से ही अन्य गद्यकारों के साहित्य के ऊपर टिप्पणियाँ करते थे । पचास के दशक के शुरुआती वर्षों में जो साहित्यिक पत्रिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी और उसमें प्रकाशित होना गौरव की बात समझी जाती थी वह दक्षिण भारत के अहिंदी प्रांत से प्रकाशित होनेवाली हैदराबाद की मासिक पत्रिका 'कल्पना' थी । इसके प्रकाशक श्री बदरी विशाल पित्ती न केवल साहित्य प्रेमी थे, बल्कि कला मर्मज्ञ और कला संग्राहक भी थे । मार्कण्डेय जी की पहला कहानी-संग्रह 'पान-फूल' इन्होंने ही अपने प्रकाशन संस्था 'नव हिन्दी पब्लिकेशन्स' से इसे प्रकाशित किया ।'पान-फूल' के प्रकाशन के अवसर पर श्री बदरी विशाल पित्ती के आमंत्रण पर मार्कण्डेय जी कुछ दिनों के लिए हैदराबाद भी गए थे औए उन्हीं की सलाह पर वे अपना नाम बदल कर 'कल्पना' पत्रिका में अपना लेख प्रकाशित करा रहे थे । जो साहित्य-जगत में ऐतिहासिक महत्त्व रखता है । "कल्पना में मेरी कहानियाँ लगातार छपने लगी और पत्रों के मध्याम से ही 'कल्पना' के संपादक श्री बदरी विशाल पित्ती से मेरी घनिष्ठ मित्रता हो गयी जो हमेंशा कायम रही और उनका स्नेह-सहयोग उसी तरह प्राप्त रहा ।"[14]

'कल्पना' पत्रिका का नियमित लेखक होने और श्री बदरी विशाल पित्ती की निकटता के हर अंक में साहित्य समीक्षा का एक स्तम्भ 'साहित्याधारा' चक्रधर उपनाम से लिखते थे । उनकी तीखी टिप्पणियों की हर माह पाठकों को उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती थी । इस गुमनाम स्तंभकार ने कई स्थापित साहित्यकारों की बखिया उधेड़ने में कसर नहीं छोड़ी थी । 'कल्पना' अपने समय की एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक पत्रिका रही है और 'साहित्याधारा' इस पत्रिका में प्रकाशित होनेवाला एक विशिष्ट और चर्चित स्तम्भ रहा है । यह स्तम्भ मार्च 1954 से मार्च 1959 तक प्रकाशित है । ऐसा नहीं कि यह लगातार छपा है । बीच-बीच में अंतराल भी है । कुल मिलाकर पैंतीस स्तम्भ मिलते हैं । जिसमें 1954 ई॰ में आठ, 1955 ई॰ में छः, 1956 ई॰ में आठ, 1957 ई॰ में तीन, 1958 ई॰ में सात एवं 1959 ई॰ में तीन स्तम्भ है जो मार्कण्डेय जी ने चक्रधर नाम से लिखे । 1959 ई॰ के बाद के स्तंभों के लेखक चक्रधर नहीं है । चक्रांग, चक्रपाणि और चतुरानन जैसे नाम बाद के स्तंभों में दिखाई देते हैं। और इन नामों पर से रहस्य का पर्दा अभी तक नहीं हट पाया है ।

मार्कण्डेय जी के कुशल सम्पादन में 'माया' पत्रिका के दो विशेषांक प्रकाशित हुए । पहला 'कुम्भ' विशेषांक और दूसरा 'भारत-1965' विशेषांक है । 'कुम्भ' विशेषांक भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य और राजनीति को समाहित करते हुए एक स्मरणीय अंक बन गया । भारत-1965' विशेषांक देश संबंधी विचारों को प्रस्तुत करता है । जिसके प्रकाशन के पीछे मार्कण्डेय जी का कथन है – "1962-1963 में गया की एक कथा-गोष्ठी में मैंने कहा था कि नया लेखक अपरिभाषित संदर्भों का लेखक है । इसे लेकर कई नए लेखक मेरे ऊपर बहुत नाराज हुए थे । अर्थ यह लगाया गया कि तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था का चित्र पूर्णतः उद्घाटित नहीं है । लेकिन मेरे ऐसा कहने का अभिप्राय ही कुछ और था जिसे व्यखायित करने के लिए मैंने 'माया' के ऐतिहासिक भारत-1965 विशेषांक का सम्पादन किया ।"[15]

संदर्भ सूची

1. श्रीवास्तव परमानंद, अमरकांत:रूपवाद के विरूद्ध, अमरकांत एक मूल्यांकन, सम्पा॰- रवीन्द्र कालिया, सामयिक बुक्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2012, पृष्ठ संख्या – 169 ।
2. श्रीवास्तव परमानन्द, कहानी की रचना प्रक्रिया, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण – 2012, पृष्ठ संख्या – 160 ।

3. सेबरदेफ एस॰, मार्कण्डेय की कहानियाँ पढ़ने के बाद, कहानीकार मार्कण्डेय, सम्पा॰- दुर्गा प्रसाद सिंह, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या –24।
4. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 1996, पृष्ठ संख्या – 159।
5. अमरकांत, कुछ यादें कुछ बातें, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2005, पृष्ठ संख्या –16।
6. मधुरेश, हिन्दी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 1996, पृष्ठ संख्या – 158।
7. बलभद्र, मार्कण्डेय की कहानियों में खेतिहर समाज, कहानीकार मार्कण्डेय, सम्पा॰- दुर्गा प्रसाद सिंह, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या – 35।
8. पाण्डेय महेन्द्रनाथ, मार्कण्डेय की कहानियाँ: आधुनिक गाँव से साक्षात्कार, कहानीकार मार्कण्डेय, सम्पा॰- दुर्गा प्रसाद सिंह, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या – 28-29।
9. द्विवेदी हजारी प्रसाद, साहित्य और सहचर, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण – 1976, पृष्ठ संख्या – 84।
10. बोस एन॰ के, सिलेक्शन्स फ्रार्म गांधी, नवजीवन पब्लिकेशन हाउस इलाहाबाद, संस्करण – 1957, पृष्ठ संख्या – 48।
11. अमरकांत, कुछ यादें कुछ बातें, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2005, पृष्ठ संख्या –10।
12. अमरकांत, कुछ यादें कुछ बातें, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2005, पृष्ठ संख्या –17।
13. श्रीधर विजय दत्त, भारतीय पत्रकारिता कोश खंड-दो, माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण – 2008, पृष्ठ संख्या – 722।
14. मार्कण्डेय, मेरी कथा यात्रा, कहानीकार मार्कण्डेय, सम्पा॰- दुर्गा प्रसाद सिंह, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या – 17।
15. मार्कण्डेय, मेरी कथा यात्रा, कहानीकार मार्कण्डेय, सम्पा॰- दुर्गा प्रसाद सिंह, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण – 2017, पृष्ठ संख्या – 21।